B.com-I Paper-1 - Business organisation (H/S) | सुजीत कुमार सुमन R.N.C

(Q5) संगठन से आप क्या समझते हैं ? इसके उद्देश्यों एवं सिद्धांतों का वर्णन करें ?

उत्तर

संगठन से हमारा अभिप्राय विभिन्न अंगों का समन्वित रूप से है। व्यावसायिक संगठन व्यवसाय के विभिन्न अंग या विभाग का समन्वित रूप है, विभिन्न विद्वानों ने संगठन शब्द को अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है जो निम्न है :—

प्रो० लैंसबर्ग एवं स्प्रीगल के अनुसार - "संगठन किसी उपक्रम के विभिन्न घटकों के बीच संरचनात्मक संबंध होता है।"

प्रो० एल. एच. हैने के अनुसार - "किसी सामान्य उद्देश्य या उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विशिष्ट अंगों का मैत्रीपूर्ण संयोजन ही संगठन है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि "उत्पादन के विभिन्न साधनों - भूमि, श्रम, पूंजी व साहस की युक्तिपूर्ण व्यवस्था करना और प्रभावपूर्ण सहकारिता स्थापित करना ही संगठन है।"

* उद्देश्य → संगठन का उद्देश्य बहुत व्यापक है। व्यक्तियों के प्रयत्नों तथा विनियोजित पूँजी से अधिकतम लाभ प्राप्त करके व्यावसायिक उपक्रम की क्षमता बढ़ाना संगठन का प्रमुख उद्देश्य होता है। संगठन के कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

(i) प्रबंधकों को सहायता पहुँचाना → संगठन का सर्वप्रथम उद्देश्य प्रबंधकों को सहायता पहुँचाना है। संगठन संरचना उच्च प्रबंधकों को संगठन के विभिन्न स्तरों के माध्यम से व्यापारिक क्रियाओं को नियंत्रित करने का साधन प्रदान करती है। प्रबंध अपने प्रमुख कार्यों का संपादन प्रबंध के माध्यम से ही करता है।

(ii) कर्मचारियों में सहयोग की भावना विकसित करना → कर्मचारियों के सहयोग पर ही संगठन की सफलता निर्भर करती है। संगठन का एक प्रमुख उद्देश्य कर्मचारियों में सहयोग की भावना कायम करना है। कर्मचारियों को उचित मजदूरी, पदोन्नति के अवसर, कार्य की उचित दशायें इत्यादि की व्यवस्था करना भी संगठन का उद्देश्य है।

(iii) सामाजिक उद्देश्य → सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति करना भी संगठन का उद्देश्य है, संगठन वस्तुओं के उत्पादन, श्रम नीति आदि के निर्धारण में सामाजिक दृष्टिकोण को भी महत्व देता है, संगठन का उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों की सन्तुष्टि के लिए प्रयत्नशील रहना है।

(iv) निम्नतम लागत पर अधिकतम उत्पादन संभव बनाना → लाभ का उचित स्तर बनाये रखने के लिए न्यूनतम लागत आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जबकि विविध प्रकार के अपव्ययों को रोका जा सके। संगठन द्वारा उपक्रम के विभिन्न अंगों में समन्वय स्थापित किया जाता है

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

संगठन साध्य नहीं बल्कि साधन मात्र है। संगठन में उन सभी सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है जोकि निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हों। सिद्धांतविहीन संगठन संरचना से अक्सर के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। अतः संगठन की रचना सिद्धांतों के आधार पर होनी चाहिए।

## * सिद्धांत :-

(a.) विशिष्टिकरण का सिद्धांत → प्रत्येक संगठित समूह के प्रत्येक सदस्य की क्रियाओं, यथासंभव एक विशेष कार्य को करने तक ही सीमित होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, एक ही व्यक्ति को अनेक कार्य न देकर एक ही कार्य देना चाहिए और यदि संभव हो तो इस कार्य को भी कई उप-भागों में बाँटकर विभिन्न व्यक्तियों को सौंपना चाहिए।

(b.) संतुलन का सिद्धांत → संगठन की विभिन्न इकाईयों में परस्पर संतुलन होना चाहिए अर्थात् एक इकाई के अधिकार और दायित्व कहीं अधिक और दूसरे से कम न हो जाये।

(c.) उद्देश्यकी एकरूपता का सिद्धांत → प्रत्येक संगठन का तथा उसके प्रत्येक विभाग का उद्देश्य वही होना चाहिए जो समूचे उपक्रम का हो। दूसरे शब्दों में संगठन इस प्रकार का होना चाहिए कि वह स्वयं और उसके सब विभाग, उपक्रम के मूलभूत उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एकजुट रह सकें।

(d.) अधिकार का सिद्धांत → प्रत्येक संगठित समूह में किसी न किसी के पास उच्च अधिकार होते हैं। सर्वोच्च अधिकारी को चाहिए कि वह अपने अधीन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जो आदेश दे अथवा जो सूचना वह उनसे प्राप्त करना चाहे, इसके लिए वह पद श्रेणीक्रम का ही अनुसरण करे। सामान्यतः किसी भी दशा में यह क्रम भंग नहीं होना चाहिए अन्यथा अनुशासन में शिथिलता आ सकती है।

(e.) निरन्तरता का सिद्धांत → संगठन को समय के अनुकूल रखने के लिए इसमें आवश्यक संशोधन होते रहना चाहिए। दूसरे शब्दों में संगठन लचीला एवं सरल होना चाहिए। जिससे इसमें आवश्यक संशोधन किये जा सकें।

(f.) आदेश की एकता का सिद्धांत → इस सिद्धांत के अनुसार एक कर्मचारी को एक ही अधिकारी से आदेश प्राप्त होने चाहिए। अगर ऐसा नहीं है तो वह अपने उत्तरदायित्व का वहन भली प्रकार नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि कई आदेश होने से दायित्व समझने में विलम्ब होगा और अगर विरोधी आदेश हुए तो कर्मचारी असमंजस में हो जायेगा।

—०—

Scanned with CamScanner